

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly  
Magazine

Issue  
123

Year  
15

Volume  
07

FEB. 2024  
Chandigarh

Page  
24

मासिक पत्रिका  
Subscription Cost  
Annual - Rs. 150

Led Indian's Renaissance in the 19th Century



Maharishi  
Dayanand  
Saraswati

200th Jayanti

- Founded Arya Samaj, was the inspiration behind DAV Institutions, Arya Schools and Gurukuls
- Worked for the education and empowerment of women and dalits.
- Gave a slogan 'Return to Vedas' • Created awakening for self-rule.

Sponsored by Arya Families of Tricity & Kharar

Contact:

BHARTENDU SOOD

Editor, Publisher & Printer

# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in



आर्य सभे 21  
दिल्ली आर्य प्रतिबन्धी समाज  
15 इनमान रोड  
नई दिल्ली - 110001

## ॥ 200वीं जन्म शताब्दी ॥



### महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

12 फरवरी 1824 - 30 अक्टूबर 1983

19वीं सदी में भारत में जागरण के अग्रणी  
आर्य समाज के संस्थापक व डी.ए.वी. संस्थाओं,  
आर्य विद्यालयों व गुरुकुलों के प्रेरणा स्रोत,  
नारी व शुद्धों की शिक्षा व उत्थान में मुख्य भूमिका  
"वेदों की और लौटो" का नारा दिया, स्वराज्य के लिए चेतना दी  
चण्डीगढ़, पंचकुला, मोहाली, खरड के आर्य परिवार

आर्य परिवार: Usha Gupta, Sudesh Gupta, Naina Gupta, Vandana Gupta, Shobha Sobti, Madhu Raks,  
Krishna Chaudhary, Justice Preetam Pal, Dr SP Puri, Dharam Pal Kapoor, Ravi Arya, O.P.Setia, Vijay  
Mohan,Dheeraj Khurana, KC Garg, Ramesh Bawa, R.D. Rishi, Anirudh Rana, Sanjeev Chaudhary, Meena  
Sethi, Rajinder Arora, naresh Nijhawan, Ishwar Arya, JK Arora, Yogendeer Kawatra,Navneet Garg, Ajay  
Gupta,Ashutosh Sood, Brij Mohan, Vijay Punj, Ved Pal and Arya Samaj Sector-22. 9217970381

परम हर्ष की बात है कि चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकुला व खरड के 35 आर्य परिवारों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं पुण्य तिथी पर चार अखवार पंजाब केसरी, अमा उजाला, दैनिक जागरण व टाइम्स ओफ इंडिया में महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र देकर श्रद्धा सुमन दिए और उनके द्वारा किए सुधार के कार्यों को लोगों तक पहुंचाया। 35 आर्य परिवारों व आर्य समाज सैक्टर 22 ने 30 हजार के करीब राशी दान में दी। महिलाओं का सहयोग व योगदान पुरुषों की अपेक्षा अधिक रहा। हम आने वाले वर्षों में भी इस परम्परा को बनाए रखने का प्रयत्न करेंगे। सब का

**WANTED BRIDE**

**NAME : OAJ CHAWLA**  
**DOB . 22/02/1995 | Time : 02.00 AM**  
**POB. : Jalandhar**  
**Height..5'8" Complexion. Fair Vegetarian**  
**Qualification... B.Tech (Mech) M.Tech Degree in**  
**Music Nature of Job Technical**  
**Income : 15 Lacs Annually**  
**Mob. No.8360536336 | 9897248503**



शिमला का

**SHARDA**

**कामधेनु जल**

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए  
 एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

Marketing Office - H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047

## पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप बैंक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-  
 Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414  
 Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272  
 Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

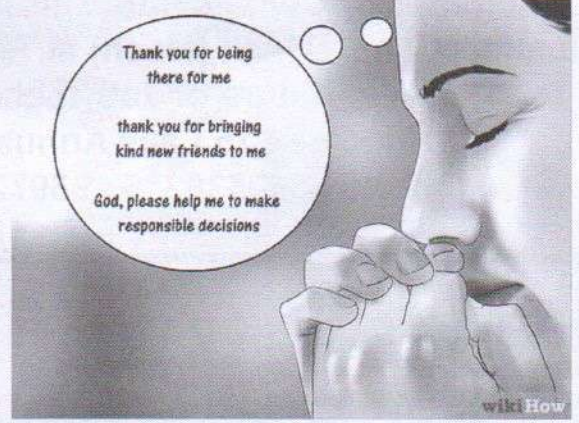
यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का बैंक भेज दे।

या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

## भक्त, प्रभु भक्ति में ही प्रसन्न रहता है

कोई मछली से कहे कि तेरी सभी ईच्छाओं को पूरा कर दिया जाएगा यदि तू पानी से बाहर आ जाए तो मछली कभी स्वीकार नहीं करेगी कारण पानी उसका जीवन है। इसी प्रकार यदि सच्चे भक्त से कहा जाए कि तुझे सब सुख मिल जाएंगे यदि तू अपनी प्रभु भक्ति को छोड़ दे तो उसे स्वीकार नहीं होगा।

निराकार, अनादि, अजर, अमर की भक्ति में अपने आप को जब कोई व्यक्ति रमा देता है तो उसे हर समय ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव होता है। उसे ऐसा महसूस होने लगता है कि ईश्वर ही उससे हर काम करवा रहा है। वह हर जगह ईश्वर को महसूस करने लगता है। इसका सब से बड़ा फायदा उसे यह होता है कि वह गलत व पापपूर्ण कार्य करने से बचा रहता है। परन्तु भक्ति तभी हो सकती है जब हम ईश्वर के ठीक स्वरूप को समझें और हमें ब्रह्म का ज्ञान हो जाए। इस ज्ञान के बिना तो भक्ति केवल एक कर्मकाण्ड है। यहां यह बता देना उपयुक्त होगा कि मूर्ती



पूजक तो तभी ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करता है जब कि वह मूर्ती के समीप होता है जब कि निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजर, अमर की भक्ति करने वाला हर समय ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करता है। शायद यही कारण था कि आर्य यमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा कि निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजर, अमर ईश्वर की मूर्ती बनाना गलत है। सर्वव्यापक को न तो हम एक मूर्ती में ठोस सकते हैं न ही एक कमरे में बन्द कर सकते हैं। इस में उस निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजर, अमर का तो अपमान है ही परन्तु भक्त भी ठीक भक्ति ईश्वर भक्ति से बंचित रहता है।

भक्ति के लिए सब से आवश्यक यह है कि ईश्वर में पूर्ण विश्वास हो यही विश्वास प्रेम को पैदा करता है। यह भी सत्य है कि प्रेम दो जानने वालों में ही होता है। हों सकता है, कई बार किसी को देखा चाहे न हो परन्तु उसके गुणों के बारे में सुना हो तब भी प्रेम हो जाता है। हमने ईश्वर को देखा नहीं परन्तु उसके गुणों के बारे में वेदों शास्त्रों में यदि पढ़ ले तो ईश्वर से प्रेम हो जाएगा और और आप ईश्वर को ही अपना मानना आरम्भ कर देंगे, यही प्रभु भक्ति है।

भक्त का ईश्वर प्रेम का दूसरा कारण यह होता है कि ब्रह्म ज्ञान के बाद उसे मालुम हो जाता है कि ईश्वर ही सर्वो गुणी व सर्वज्ञ है जब कि बाकी तो अल्पज्ञ होते हैं। ईश्वर के यह गुण ही भक्त को अवपी और खींचते जाते हैं। और आहिस्ता आहिस्ता उस में वह बात आ जाती है जां कि हम अपने भजन में कहते हैं—'आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर'

इसलिए निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजर, अमर की भक्ति ही प्रेम की खान है जो न तो खत्म होती है न ही चोर चुरा सकता है भक्ति के साथ बढ़ती ही जाती है।

## Religion for social renaissance

Bhartendu Sood

Mahatma Vidur says in Niti satakam----'whether people shower adulations or condemn them, whether their act gets them wealth, name and fame or not, whether they live hundred years or die today itself in their pursuit, a few people never renounce the path of righteousness in their mission.' Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj and spirit behind the DAV institutions and Arya schools was one such character.

In the middle of 19th century , , when Dayanand started his mission of spreading Vedas knowledge to the general masses, he was appalled at the ongoing decay of the Hindu society in general and women in particular. Whereas, the Vedas sanctioned the most dignified and exalted status to women at home and in society and she enjoyed as much right to education and a place in judiciary, legislative assemblies and state administration as men, the actual situation was quite different. Women were at the receiving end due to the centuries old taboos and superstitious beliefs. Doors of education were closed for them. General notion was that her place was within the four walls of the house. In the patriarchal society, the heinous crimes were being forced on her in the form of sati, extreme gender inequality and marriage to a person who could be of her father's age. While a widower could marry any number of times a widow had to either embrace sati or subhuman life.

Equally pitiable was the condition of shudras. It didn't take him much time to understand that vested interests in Hindu religion had abused Vedas and other religious texts, by resorting to interpolations and wrong interpretation, to create an unequal society. He proved that the Vedas being practiced then were diametrically opposed to their true spirit..

Dayanand trampled underfoot the orthodoxy which prohibited study of Vedas by women and dalits and declared that the teaching of Vedas transcended barriers of sex, caste, faith, religion and geographical boundaries. He believed that the four Vedas were the repository of knowledge having germs of all sciences. To a query why God gave Vedas, Dayanand's reply was " When the merciful God had created air, water, roots, fruits, rivers, mountains, minerals etc. for the enjoyment and happiness of his subjects, how could He, the bestower of perfect happiness and the embodiment of all knowledge have left out revealing the knowledge to use these unto them to realize dharma, artha, kama and moksha, the ultimate goal of human life. And Vedas are all about this knowledge."

To him, truth was the master word of Vedic teachings- truth in the soul, truth in the vision, truth in the intention and truth in the act. Arya was a man of superior principles and character and Arya Samaj which he founded was an assembly of good people. The Samaj postulates in principle equal justice for all men together with equality of the sexes. It repudiates a hereditary caste system and only recognizes profession as the basis for classification of society into Brahmins, Kshatriyas, Vaishs and dalits.

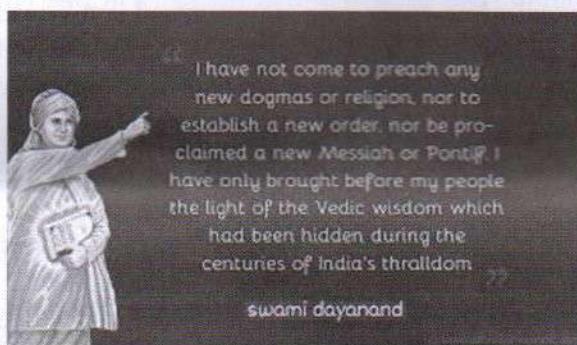
According to Swami ji, there is one God who is omnipresent and omnipotent, the Creator and Sustainer of this Universe, unborn, just and merciful. He has no image and since He is all-pervasive, He could be felt within and one could reach Him by meditation. He believed that ignorance was the cause of all miseries and it was the duty of every Arya to annihilate the gloom of ignorance by burning a candle of knowledge. He believed in looking at the world as a one unit in the spirit of Vedic Sukti-Vasudhaiva Kutumbakam-entire world is one family. Best summarized in principles of Arya Samaj- "the prime object of the Arya Samaj is to do good to the world, that is, to promote physical, spiritual and social good of everyone."----- "no one should be content with promoting his/ her well being only; on the contrary, one should look for his/her well being in promoting the well being of all".

He proclaimed very strongly that one has not to stick to any dogmas even if inherited from the people of wisdom. Once such beliefs fail to withstand the supremacy of reasoning and truth in the light of new revelations, these should be parted with, best manifested in this principle of Arya Samaj-----'one should always be ready to accept truth and to renounce what surfaces as untruth"

When Swami ji breathed his last in 1883, his disciples assembled in Lahore to create a memorial for him. However, after considering that his mission was to dispel ignorance and spread knowledge, a decision was taken to establish schools in all parts of the country to impart education by upholding the values and teachings of the Vedas. Today there are more than 2000 DAV, Arya Schools and Gurukulas in the country. These institutions while imparting the education as per the prescribed national curricula, aim at enriching students with the value system and ethics, as prescribed in Vedas and Upanishads. Today, the country's literacy rate is about 67% but still worse is the report that half of these literates have only certificates and degrees, not the knowledge in its right perspective. Therefore DAVs and Arya schools need to reach the remote areas where our children of lesser God live and ensure quality education to them. This will be the right tribute to the great sage on his 200th birth centenary being observed on 12th February, 2024..

## Learning must be accompanied by teaching and preaching

Bhartendu Sood



I have not come to preach any new dogmas or religion, nor to establish a new order, nor to proclaimed a new Messiah or Pontif. I have only brought before my people the light of the Vedic wisdom which had been hidden during the centuries of India's thralldom

swami dayanand

In Taittiriya Upanishad, ninth chapter is devoted to the ethical duties of the human beings, like speak the truth, do your duty, never swerve from the study of Vedas and many more such rules of the right conduct that prepare the man to attain Brahma. As one continues with the study of the Upanishad which is associated with the Taittiriya school of the Yajurveda, he comes across two important messages. First is 'swadhyaya pramad',

its meaning is –Don't be careless in self study. Second message is swadhyay pravachan abhiyam ' means that learning should be accompanied by teaching and preaching.

Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, who had learnt Vedas under the tutelage of a great Vedic Scholar Swami Virjanand of Mathura, when stated his mission of spreading Vedas knowledge to the general masses, he was appalled at the decantation of the Hindu society in general and women in particular. Whereas, the Vedas sanctioned the most dignified and exalted status to women at home and in society and woman had as much right to education and a place in judiciary, legislative assemblies and state administration as men, the real situation was quite different. Women was at the receiving end due to the centuries old taboos and superstitious beliefs. Doors of education were closed to her. General notion was that her place was within the four walls of the house. In the patriarchal society, the heinous crimes were being forced on her in the form of sati, marriage to a person who could be of her father's age besides subjecting her to extreme gender inequality. While a widower could marry any number of times a widow had to either embrace sati or subhuman life. Equally pitiable was the condition of shudras.

Soon Dayanand realised that this all was going on as Vedas were being practised diametrically opposed to their true interpretation. He gave a slogan- 'return to Vedas.' as Vedas provided a manual for becoming a right human being- 'manur bhava'. Taking inspiration from Taittiriya Upanishad, he included its two messages in the ten principles he framed for the functioning of Arya Samaj. First, it is the duty of an Arya Samajist to read Vedas and to preach to others. Second to dispel ignorance and spread knowledge which only could rid the society of superstitious beliefs and social evils.

Besides strongly postulating gender equality, Dayanand's Arya Samaj repudiated a heredity cast system .

When Swami ji breathed his last in 1883, his disciples assembled in Lahore to create a memorial for him. However, after considering that his mission was to dispel ignorance and spread knowledge, a decision was taken to establish schools in all parts of the country to impart education by upholding the values and teachings of the Vedas. Today there are more than 2000 DAV, Arya Schools and Gurukulas in the country. These institutions while imparting the education as per the prescribed national curricula, aim at enriching students with the value system and ethics, as prescribed in Vedas and Upanishads

Today country's literacy rate is about 67% but still worse is the report that half of these literates have only certificates and degrees, not the knowledge in its right perspective. Therefore DAVs and Arya schools need to reach the remote areas where our children of lesser God live and ensure quality education to them. This will be the right tribute to the great sage on his 200th birth centenary being observed on 12th February,2024..

After Dayanand left his mortal body in 1883, his disciples which included the likes of Mahatma Hansraj, Lala Rajpat Rai and Guru Dutt Vidyarthi embraced these two principles as the torch bearers planted the seeds of educational institutions by the name Dayanand Anglo Vedic( DAV), Arya Schools and Arya Kanya schools exclusively for girls. These institutions while imparting the education as per the prescribed national curricula aim at enriching students with the value system and ethics as prescribed Vedas and Upanishads. His another highly distinguished disciple Swami Shardhanand went a step ahead and set up Gurukuls to impart education as per the system prescribed in Vedas and Upanishads. It impressed Mahatma Gandhi so much that after returning from Africa, the first thing he did was to visit Gurukul established at Haridwar.

It is a matter of great satisfaction that Arya Samaj continues with its untiring zeal to spread education by establishing DAV and Gurukul institutions throughout the length and breadth of the country with twin objectives of teaching and preach Vedas to keep Vedic values alive and second of dispeling ignorance and spreading knowledge so that people are freed from social taboos and superstitious beliefs which are a hindrance to our country attaining the glory of ancient times. Today there are more than 2000 such schools imparting education in cities, towns and remote areas.

## असली मित्र कोन है ?

नीला सूद



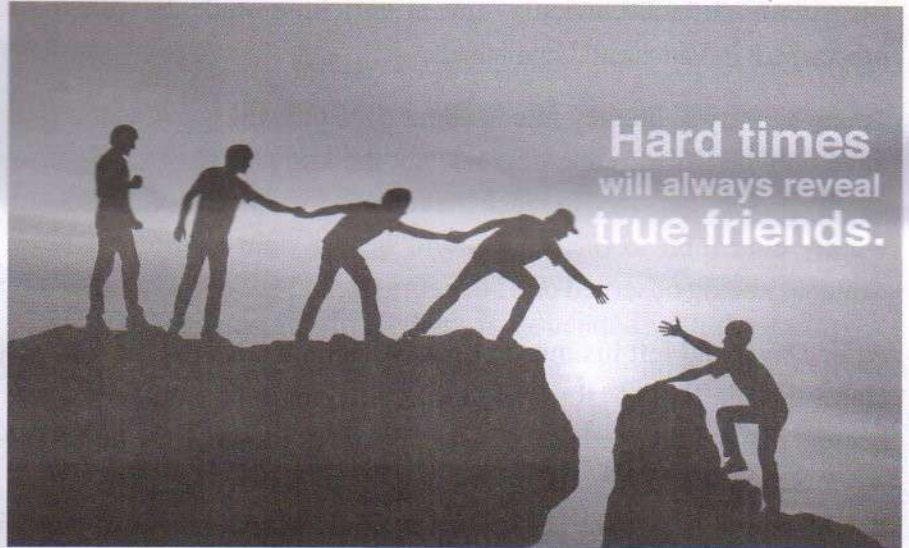
एक बार एक अच्छा व्यक्ति निर्दोष होने के बावजूद अदालत में दोषी होने के कगार पर आ गया। उसके वकील ने उसे कहा कि अदालतें तो सबूत व गवाह मांगती है। अगर तुम्हारे पास गवाह है तभी बचाव हो सकता है।

उस व्यक्ति के तीन बहुत घनिष्ठ मित्र थे, जिन पर उसे बहुत भरोसा था। पहले वह उस के पास गया, जिसे वह सब से घनिष्ठ मानता था, उसने कुछ हमदर्दी के शब्द कहकर अपना पीछा छुड़वाया। जब दूसरे के पास गया तो उसने कहा—मित्र अगर कुछ धन चाहिये तो मैं दे सकता हूँ पर इन कोर्ट कचहरी के चक्करों में नहीं पड़ना चाहता। हताश वह आखीरकार तीसरे मित्र के पास गया। उसने बात सुनी तो खुशी से न्यायधीश के पास गवाह बनकर जाने

को तैयार हो गया।

इसी तरह, हम भी अपनी जिन्दगी में अपने तीन मित्रों पर बहुत भरोसा कर के चलते हैं। सब से बड़ा मित्र हम अपनी जायदाद व धन दौलत को मानते हैं पर यह मित्र न तो हमें मृत्यु से बचा सकता है और न ही जब बुढ़ापे के कारण अंग काम करने बन्द

कर देते हैं तब सहायक होता है। हमारे सगे सम्बन्धी हमारे दूसरे मित्र की तरह हैं, वे शमशान भूमी तक ही साथ चलेगें। हमारे तीसरे मित्र हैं, अच्छे कर्म जो कि मृत्यु के पश्चात भी हमारे साथ रहकर हमारे अगले जन्म को सुधारेगें। हम पुराणों में पढ़ते हैं कि धर्मराज ने हमारे अच्छे व बुरे कर्मों का खाता रखा होता है, यदि अच्छे कर्म बुरे कर्मों से अधिक हों तो मानव योनी



मिलती है वरना बाकी 1,86,000 में से किसी एक योनी में, हमारे कर्मों के अनुसार जन्म होता है। चाहे यह 186000 योनीयों की बात केवल एक ढकोंसला हो पर जो बात सीखने वाली है वह यह है कि मनुष्य योनी बहुत कीमती है व यह तभी नसीब होती है जब हमारे कर्म अच्छे होंगे। यही नहीं अगर कर्म अच्छे नहीं तो मानव का चोला पाकर भी हम अपने खराब कर्म को भोग कर दुख पायेंगे। क्योंकि कर्म तो भोग कर ही खत्म होते हैं।

श्रेष्ठ कर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवन दर्शन है। ' कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेत' हे मनुष्यो ! पुरुशार्थी और कर्मशील बनो।

जहा अच्छें कर्मों से मनुष्य देवता बनता है, वही बुरें कर्मों से मनुष्य राक्षस बन जाता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है वैसा काटता है। जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव कर्मानुसार जगत में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता है और अकेला ही चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति, आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।



हमने कर्म कैसे किये इसका मूल्यांकन तो हम खुद कर सकते हैं। प्रार्थना करते समय अपने कर्मों का मूल्यांकन करे या रात को सोने से पहले बिस्तर पर बैठ कर पांच मिनट के लिये साँचिये आज का दिन कैसा बीता। हमने अपने आप से दो प्रश्न पूछने हैं। पहला—क्या मैंने कोई ऐसा कार्य तो नहीं किया जिससे दूसरे के मन को ठेस पहुंची हो? दूसरा—क्या मैंने कोई ऐसा कार्य किया जिससे दूसरे का जीवन बेहतर हो गया हो?

किसी सन्त से मैंने उपदेश में सुना था कि हम मनुष्यों को तीन श्रेणीयों में बांट सकते हैं। पहली श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो अपने को कष्ट में डाल कर भी दूसरों को सुख पहुंचाते हैं। इन्हे हम देवता कहते हैं। दूसरी श्रेणी में वे आते हैं जो काम करते हुये यह ध्यान रखते हैं कि हमारे कार्य से दूसरे को कष्ट न हो—मेरा भी कल्याण दूसरे का भी कल्याण। हां इस श्रेणी के व्यक्ति जिन्हे 'मनुष्य कहा गया है देवताओं की तरह दूसरों को सुख पहुंचाने के लिये अपने को कष्ट में नहीं डालते।

तीसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो दूसरों को दुख पहुंचाने के लिये व दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिये, अपना खुद का नुकसान करने में भी परहेज़ नहीं करते। ऐसे लोगों को असुर कहा गया है।

आगे उन सन्त ने कहा— देवता बनना आसान नहीं पर हम मनुष्य बनें और असुर कभी न बने।

मनुष्य कैसे बने?— आदमी दुनियां के कामों को करते हुए अपने जीवन को दीन-दुखियों की सेवा में लगाए, मानवता के हर एक काम को करते हुए गौरव अनुभव करें। ईश्वर महान-दयालु है, इस लिए सच्चा ईश्वर भक्त बनने के लिये हर रोज कुछ न कुछ दया का काम करना चाहिए। जब आदमी दया-क्षमा-प्यार-नम्रता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, तब मन शान्ति से भर जाता है और इस प्रकार मानव को अनुभव होता है कि जीवन का हर पल संगीत की तरह आनन्दमय बन गया है। परोपकार ईश्वर-भक्ति का ओर ले जाने वाले साधन है।

जिस प्रकार सूरज प्रकाश फैलाकर उष्मा देकर सब का कल्याण कर रहा है,, फूल खुशबू फैला कर सब के मन को उल्लास से भर देता है, इसी प्रकार हम भी मानव बनकर इन्सानियत फैलाएं। यही ईश्वर भक्ति है व यही असल कमाई है।

## धर्म और राजनीति

अम्बाराम सिद्धान्त पास्ट्री

नेताओं का तो धर्म से कुछ भी लेना देना नहीं है क्योंकि उनका नारा है धर्म को राजनीति से दूर रखो परन्तु बिना धर्म के तो मनुष्य मृत समान ही है। पशु समान भी नहीं कह सकते क्योंकि पशुओं के पास भी स्वाभाविक धर्म परमात्मा प्रदत्त है। हाल ही में न्यूजनेषन में एक संन्यासी ने भी यही बात कहीं कि धर्म और राजनीति को साथ न जोड़ें। मैं कहता हूँ जो नेता यह कहे कि धर्म को राजनीति से अलग रखें उसे तो देष निकाला दे देना चाहिए क्योंकि भारत तो विष्व का धर्मगुरु रहा है यदि धर्म राजनीति में नहीं रहेगा तो राजनीति भी मृतक समान होगी। जैसा वर्तमान की राजनीति में देखा भी जा रहा है। महर्षि मनु महाराज मनुस्मृति में कहते हैं— "वेद स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मन। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥ मनु0 2/12 ॥ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं अर्थात् श्रुति, वेद, स्मृति वेदानुकूल आप्तोक्त मनुस्मृत्यादि भास्त्र., सत्पुरुषों का आचार जो सनातन अर्थात् वेद द्वारा परमेश्वर प्रतिपादित कर्म और अपने आत्मा में प्रिय अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है जैसा कि सत्यभाषण ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इन्हीं से धर्माधर्म का निश्चय होता है। जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्यागरूप आचार है उसी का नाम धर्म और इससे विपरीत जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरूप कर्म है उसी को अधर्म कहते हैं"। नेताओं

से यह पूछा जाना चाहिए कि उक्त धर्म का त्याग करके राजनीति चल सकती है यदि फिर भी वे कहते हैं हों चल सकती है तो समझ लेना चाहिए ऐसे नेता देश को घोरघने अन्धकार की ओर ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। ये देश की वैदिक संस्कृति और मानवता पर कुठाराघात कर रहे हैं। जैसा वर्तमान में हो रहा है। हां मत, मजहब, पंथ जो मनुश्यों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाये हैं उन्हें राजनीति से दूर रखना चाहिए। मत, मजहब, पंथ किसी विशेष समुदाय, सम्प्रदाय के लिए धर्म हो सकता है। परन्तु यह सार्वदेशिक, सार्वभौमिक सार्वकालिक नहीं माना जा सकता है। अतः राजनीति से इन्हें दूर रखने में ही हितकर है। मैं समझता हूँ कि हर नेता को मनुस्मृति तो अवश्य पढ़नी चाहिए ताकि उन्हें धर्म अधर्म और राजधर्म के विशय में पूरी जानकारी हो सके। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज का दृष्टिकोण था कि अगर



विभिन्न सम्प्रदाय मूल मानवीय धर्म (वैदिक धर्म)को स्वीकार करके चलें तो वे कुसंस्कारों और जड़ताओ से मुक्त होकर वैदिक मूल्यों पर प्रतिष्ठित रह सकते हैं और आपसी वैमनस्य से मुक्त हो सकते हैं। पर हर धर्म-सम्प्रदाय में निहित स्वार्थी वर्ग इतना प्रबल है कि वह महर्षि के दृष्टिकोण को न समझ सकता था और न उनके विचारों को मान सकता था। फलतः अनेक सम्प्रदायों के धर्मचार्यों ने उनके सुझावों को मानने से इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भारत हजारों मत-मजहबों में बटने के कारण जनता भ्रम में है कि आखिर सच्चा धर्म कौन सा है? जरा सोचिए महाभारत काल से पूर्व हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई आदि साम्प्रदायिक मत-मतान्तरों का अस्तित्व कहाँ था? सर्वदा आर्य षब्द ही प्रयुक्त होता था। वेद का 'आर्य' षब्द जाति-वर्ण-काल या देश का वाचक नहीं है, वह गुणात्मक है।

वेद के अनुसार धर्म का मुख्य उद्देश्य समाज में समरूपता, सामनजस्य और भाईचारे की भावना उत्पन्न कर मानव समाज का षारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करना है। मानव समाज के जीवन के हर क्षेत्र में विकास इस प्रकार से हो कि जिससे शिक्षा प्राप्ति से कोई वंचित न रहे, न कोई आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रह जाये, न स्वास्थ्य सेवाओं का पूरा लाभ किसी को न मिल पाये। जीवन में श्रद्धा, तप, दया, परमार्थ, यज्ञ, दान, षान्ति, मित्रता, अभय एवं सौमनस्यम् आदि धारण करने का ही नाम धर्म है। इन सबसे भी बढ़कर परमात्मा के आलम्बन की आवष्यकता है।

ऐ संसार के लोगों! यदि विष्व में एकता चाहने का उद्देश्य और लक्ष्य है तो आइये परमात्मा की वाणी वेद की षरण में जाने का संकल्प लें। तभी संसार का कल्याण होगा। केवल वेद के द्वारा ही विष्व में षान्ति स्थापित हो सकती है, तभी अनेकता में एकता हो सकती है।

अन्त में यही निश्कर्ष निकलता है कि जबतक हम एक धर्म वैदिक धर्म जो सृष्टि के आदि से चला आ रहा है अर्थात् जो भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल में एक जैसा रहता है कभी भी नया या पुराना नहीं होता जबतक हम उसी मार्ग पर नहीं चलेंगे तबतक अनेकता में एकता कभी भी नहीं आ सकती। अनेकता में एकता का मंत्र केवल और केवल वेद मार्ग पर चलने में ही सम्भव है।

पाठक! वैदिक धर्म वेदमार्ग पर चलकर प्रेम और उत्साह से बोलिए "वैदिक धर्म की जय"। इत्योम् षम् ॥

अम्बाराम सिद्धान्त षास्त्री, वेद सदन, महर्षि दयानन्द मार्ग, हिम्मतपुर मल्ला, हरिपुर नायक, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड,  
मो0 ९५५७००४७९४

## His grand initiative left even the Pakistan Judge indebted

Neela Sood



This heartening anecdote is of the year 2013. Justice Ramday of the Pakistan High Court was in Arya School Nawanshahr, Punjab, to inaugurate the new auditorium building of the school for which the entire money was donated by his late father, Justice Mohammed Sadique, who had also retired as the Judge of Pakistan High Court.

Addressing the gathering, he said that his father often told his children, that he could become a Judge only because Arya Samaj set up a High school in Nawanshahr, way back in the year 1911 which enabled him to do schooling. The other nearest school was in Jalandhar which was beyond his reach as it was 66 KM from his village.

True, much before India got independence, all towns and cities of Punjab had Arya School or DAV School and in many places Arya Kanya Vidyalaya i.e. schools exclusively for girls. But, it was easier said than done. The first Arya Kanya Maha Vidyalaya, which was setup in Jalandhar in the year 1891 had to be closed and then reopened thrice in a span of two years as the Hindu Community was dead against the education of women.

The spirit behind this noble mission was Maharishi Dayanand Saraswati, a sage, erudite scholar of Vedas and founder of Arya Samaj who led the Indian renaissance in the 19th Century. After acquiring knowledge of Vedic scriptures, when Swami ji moved across the country, he was pained to see the deplorable condition of women. Educating women was a social taboo. A notion was created that her place was within the four walls of the house. Dayanand could realise that it was happening because the Indian priesthood for their selfish interest were practicing scriptures not in consonance with their true spirit which otherwise gave a dignified and exalted status to women at home and in society.

Strongly opposing child marriage and Sati, he upheld widow remarriage. Dayanand advocated for the supreme say of women in the matter of marriage. He was convinced that only education could rid Indian society of such evils.

When Swami ji breathed his last in 1883, his disciples took a decision to establish schools in all parts of the country as that could be the right memorial to the sage who gave a call ' dispel ignorance and spread knowledge'. Though, today the country has more than 2000 DAV, Arya Schools and Gurukulas but we must accept that all is not well when it comes to our school education, as it is creating two Indias. DAV's and Arya Schools need to reach out to our children of lesser God and that will be the right tribute to the great sage when his 200th birth centenary is being celebrated in the country.

## वैदिक प्रवचन

कृष्णचन्द्र गग



1. ईश्वर एक है, अनेक नहीं –

(क) न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो न अपि उच्यते । न पञ्चमो न षष्ठः  
सप्तमो न अपि उच्यते ।  
अष्टमो न नवमो दशमो न अपि उच्यते । (अथर्ववेद 13-4-16,  
17,18)

अर्थ – वह परमात्मा दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवा, छठा, सातवां, आठवां, नौवां, दसवां है –  
ऐसा नहीं कहा जाता है । वह परमात्मा एक ही है ।

(ख) इन्द्रं मित्रं वरुणं अग्निं आहुः अथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् । एकं  
सद् विप्रा बहुधा वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानय्  
आहुः । (ऋग्वेद 1-164-46)

अर्थ – एक ही परमात्मा को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं । उसे ही इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, सुपर्ण, गरुत्मान, यम तथा मातरिश्वान आदि नामों से बुलाते हैं । अल्लाह या ळवक नहीं ।

2. राक्षस कौन –

असुर्य्या नाम ते लोका ऽअन्धेन तमसावृताः ।

तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के च आत्महनो जनाः ॥ (युजर्वेद 40-3)

अर्थ :- जो लोग अपनी आत्मा का हनन करते हैं अर्थात् मन में और, वाणी में और तथा कर्म कुछ और करते हैं वे राक्षस हैं तथा अज्ञान अन्धकार में फंसे हैं । मरने के पश्चात भी वे गहरे अन्धकारमय जीवन को पाते हैं ।

3. ईश्वर की सत्ता –

(क) अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति ।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति । (अथर्ववेद 10-8-32)

अर्थ – अन्दर बैठे ईश्वर से मनुष्य कभी अलग नहीं हो सकता । उस अन्दर बैठे ईश्वर को मनुष्य आँख से देख भी नहीं सकता । उस परम देव ईश्वर के वेद ज्ञान को जान जो न कभी मरता है और न ही कभी पुराना होता है ।

(ख) यः तष्ठति चरति यः च वञ्चति यो निलायं चरति यः

प्रतंकम् । द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः ॥ (अथर्ववेद 4-16-2)

अर्थ – चाहे कोई मनुष्य खड़ा है या चल रहा है, चाहे कोई किसी को ठग रहा है, चाहे कोई किसी के पीछे छिपकर षडयन्त्र रच रहा है, चाहे दो मनुष्य कहीं एकान्त में किसी विषय पर गुप्त चर्चा कर रहे हैं, सर्व व्यापक अन्तर्यामी परमेश्वर तीसरा वहाँ उपस्थित होता हुआ सब कुछ जान लेता है ।

4. कर्मफल –

(क) न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति ।

अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति ॥ (अथर्ववेद 12-3-48)

अर्थ – अच्छे बुरे कर्म के फल में किसी भी क्रियाकाण्ड से कोई कमी नहीं आती, न किसी की सिफारिश चलती है और न कोई मित्र-साथी या सम्बन्धी कर्मफल का हिस्सा ले सकता है । जिसका कर्म है उसका फल उसे ही मिलता है और जितना है उतना ही मिलता है, कम-अधिक नहीं ।

(ख) यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो गच्छति मातरम् ।

तथा यच्च कृतं कर्म कर्तारमनुच्छति ।। (चाणक्यनीति 13-14)

अर्थ - जैसे बछड़ा हजारों गऊओं के बीच में खड़ी अपनी माँ के पास ही जाता है उसी प्रकार कर्मफल कर्ता को ही मिलता है।

5. भूमि -

(क) माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः । पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ।। (अथर्ववेद 12-1-12)

अर्थ - भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ। बादल पिता है, वह हमारा पालन करे।

(ख) सा नो भूमिः विसृजतां माता पुत्राय मे पयः ।। (अथर्ववेद 12-1-10)

अर्थ - जिस प्रकार माता अपनी सन्तान को दूध पिलाती है, उसी प्रकार यह भूमि हम सबको खाने-पीने की वस्तुएं प्रदान करती है।

6. गाय -

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसा आदित्यानाम् अमृतस्य नाभिः ।

(क) प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागं अदितिं वधिष्ट । (ऋग्वेद 8-101-15)

अर्थ - गाय दूध रूपी अमृत से माता की तरह हमारी पालना करती है, पुत्री और बहिन की तरह स्नेह करती है। इसलिए गाय वध के योग्य नहीं है। जो गाय को मारता है वह पाप और अपराध करता है। गाय की हर प्रकार से रक्षा की जाये।

(ख) गाय की उपयोगिता का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द ने 'गोकुरुणानिधि' पुस्तक लिखी तथा गाय की रक्षा के लिए 'गोकृषि आदि रक्षिणी सभा' बनाई।

7. मनुष्य एक घोड़ा गाड़ी -

रथे तिष्ठन् नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः ।

(क) अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छति रश्मयः ।। (यजुर्वेद 29-43)

अर्थ - रथ पर बैठा हुआ अच्छा चालक आगे दौड़ने वाले घोड़ों की जहां जहां चाहता है वहां वहां ले जाता है। पीछे लगी रस्सियां घोड़ों को चलाती हैं। ऐसे ही मन इन्द्रियों को चलाता है।

(ख) कठोपनिषद में मनुष्य की तुलना एक घोड़ा गाड़ी (रथ) से की गई है। उसमें मनुष्य शरीर रथ है, आत्मा रथी अर्थात् रथ का स्वामी है, बुद्धि सारथी और मन लगाम है। इन्द्रियां घोड़े हैं, इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं।

8. गृहस्थ में रहो -

(क) इंहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।

कीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिः मोदमानौ स्वस्तकौ । (अथर्ववेद 14-1-22)

अर्थ - हे वरवधु! तुम दोनों इस गृहस्थ आश्रम में रहो, कभी अलग मत होवो। पुत्रों, नातियों के साथ खेलते हुए आनन्द प्रसन्न रहते हुए बढ़िया घर में रहते हुए अपनी पूरी आयु को अच्छे प्रकार से भोगो।

(ख) इह इमौ इन्द्र सं नुद चकवाका इव दम्पती ।

प्रजया एनौ सु अस्तकौ विश्वम् आयुः व्यश्नुताम् । (अथर्ववेद 14-2-64)

अर्थ - हे प्रभु! पति-पत्नी दोनों मिलकर चकवा-चकवी की भान्ति आनन्द से रहें। उत्तम घर वाले और उत्तम सन्तान वाले होकर सारी आयु आनन्द से व्यतीत करें।

9. स्त्री -

(क) अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादकौ हर ।

मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविध ॥ (ऋग्वेद 8-33-19)

अर्थ – हे स्त्री! तू नीचे की ओर देख, ऊपर की ओर तांक-झांक मत कर। अच्छी तरह सम्मल कर अपने पैरों को चला। तेरे स्तन दिखाई न दें। स्त्री मनुष्य समाज को रचने वाली हैं।

(ख) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया ॥ (मनुस्मृति 3-56)

अर्थ – जिस कुल में नारियों का सत्कार होता है उस कुल में उत्तम भोग और उत्तम सन्तान होते हैं। जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता वहां जानो उनकी सब क्रिया निष्फल होती है।

10. मांस आहार –

(क) एतद् वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं

वा तदेव नाशनीयात् ॥

(अथर्ववेद 9-6-3-9)

अर्थ – वही खाद्य पदार्थ स्वादिष्ट और लाभकारी होता है जो या तो भूमि में पैदा हो या गाय आदि पशुओं से दूध के रूप में प्राप्त हो। इसलिए मांस न खाना चाहिए।

(ख) अनुमन्ता विशंसिता निहन्ता कयविकयी ।

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥ (मनुस्मृति 5-51)

अर्थ – पशुओं को मारने के लिए बेचने वाला, खरीदने वाला, पशु को मारने की आज्ञा देने वाला, मारने वाला, मांस को काटने वाला, मांस पकाने वाला, परोसने वाला और मांस खाने वाला – ये सब हत्यारे और पापी हैं।

11. पुनर्जन्म –

(क) त्वं स्त्री त्वं पुमान् असि त्वं कुमार उत वा कुमारी ।

त्वं जीर्णो दण्डेन वचसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः ॥ (अथर्ववेद 10-8-27)

अर्थ – हे जीव! तू स्त्री है, तू पुरुष है, तू कुमार है और तू कुमारी है। तू वृद्ध होने पर दण्ड के सहारे चलता है। तू शरीरधारी होकर अनेक मुखों वाला होता है।

(ख) उत एषां पिता उत वा पुत्र एषां उत एषां ज्येष्ठ उत वा कनिष्ठः ।

एको ह देवो मनसि प्रविष्टः प्रथमो जातः स उ गर्भे अन्तः ॥ (अथर्ववेद 10-8-28)

अर्थ – जीवात्मा कभी तो बालकों का पिता बनता है और कभी उनका पुत्र बन जाता है। वह भाईयों में कभी बड़ा भाई और कभी छोटा भाई बन जाता है। एक-एक जीवात्मा एक-एक मन में प्रवेश पाता है। वह पहले भी शरीर ग्रहण करके उत्पन्न होता रहा है और वह गर्भ में नए नए रूप में आता रहता है।

(ग) नैव स्त्री न पुमान् एष न च नपुंसकः ।

यद् यह शरीरम् आदत्ते तेन तेन स रक्ष्यते ॥ (श्वेताश्वतर उपनिषद्)

अर्थ – जीवात्मा न स्त्रीलिंगी है, न पुल्लिंगी है और ना ही नपुंसक-लिंगी है। जिस जिस शरीर को यह पाता है उस उस के लिंग का कहा जाता है।

12. ज्ञान से दुष्ट भाव दूर हो जाते हैं –

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।

एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति ॥

(अथर्ववेद 10-1-13)

अर्थ – जैसे वायु भूमि से धूल और आकाश से बादलों को उड़ा देती है वैसे ही ज्ञान द्वारा मेरे सब दुष्ट भाव दूर हो जाएं।

## आचारः परमो धर्मः-शुभ आचरण ही व्यक्ति को धार्मिक बनाता है,

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा ।- चाहे एक व्यक्ति सारे वेदों का ज्ञाता ही क्यों न हो, यदि उसका आचरण अच्छा नहीं है तो उसके जीवन में पवित्रता नहीं आ सकती।

एक राजपुरोहित थे व अपने अथाह ज्ञान के कारण राज्य में बहुत प्रतिष्ठित थे। बड़े-बड़े विद्वान उनके प्रति आदरभाव रखते थे। यही नहीं राजा भी उनका बहुत सम्मान करते थे व उनके राज दरबार में आने पर उठ कर उनको आसन देते थे। परन्तु उन्हें अपने ज्ञान का लेश मात्र भी अभिमान नहीं था। एक बार राजपुरोहित के मन में यह जानने की लालसा उठी कि उन्हे जो यह सम्मान मिलता है, वह अच्छे चरित्र के कारण है या ज्ञान के कारण। इसके समाधान के लिये उन्होने मन्त्री से मिलकर एक योजना बनाई।

योजना को क्रियान्वित करने के लिये राजपुरोहित राजा का खजाना देखने के लिये गये। खजाना देखकर लोटते समय उन्होने खजाने से पाचं बहुमूल्य मोती उठाकर अपनी जेब में डाल लिये। खजाचीं हैरान थां। क्या इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति भी लोभी हो सकता है? उसे विश्वास नहीं हो रहा था। खैर वह चुप रहा। दूसरे दिन राजपुरोहित ने फिर वैसे ही किया। अब तो खजाचीं के मन में जो भी श्रद्धा राजपुरोहित के लिये थी, क्षीण हो गई। तीसरे दिन जब राजपुरोहित ने फिर वैसे ही किया तो खजाचीं ने सब कुछ राजा को बता दिया। राजा ने यह सुना तो हैरान थे। उनके मन में जो भी आदरभाव राजपुरोहित के लिये था वह चूर चूर हो गया।

अगले दिन जब राजपुरोहित सभा में आये तो पहले कि तरह न तो राजा अपने सिंहीसन से उठे और न ही उन्हीने राजपुरोहित का अभिवादन किया।

राजपुरोहित को सब कुछ समझते देर न लगी। इससे पहले राजा कुछ पूछते राजपुरोहित ने राजा को स्वयं ही बता दिया कि उसने यह जानने के लिए कि चरित्र उंचा है या ज्ञान, मन्त्री को विश्वास में लेकर यह खेल रचा था। आज उसे पता लग गया ही कि चरित्र के बिना ज्ञान का कोई मूल्य नहीं। उसने बहुमूल्य मोती जेब से निकालकर राजा को लोटा दिये।

यह कहानी एक गहन विषय की और ले जाती है। जब महात्मा बुद्ध का प्रार्दुभाव हुआ तो भारत में ज्ञान की बातें करने वाले तो बहुत थे पर उनका आचार व्यवहार खत्म हो गया था। धर्म गुरुओं में व मन्दिरों में भी धर्म व चरित्र दोनो खत्म हो गए थे। स्वार्थी व लोभी पण्डितो के कारण धर्म का बहुत धिनोना रूप सामने आ रहा था। अग्नीहोत्रों में पशुओं की बली तक दी जाती थी। निम्न वर्गों के लोगों को वेदों से दूर कर दिया गया था। ऐसे मे महात्मा बुद्ध ने सोचा आत्मा परमात्मा की बात तो बाद में हो,पहले तो आचार व्यवहार से विहीन हुए धर्म में आचार व्यवहार को वापिस लाना होगा। इस तरह जन्म हुआ बोद्ध धर्म का व जब महात्मा बुद्ध ने महात्मा मनु की इस बात को आचारः परमो धर्मः-व्यक्ति धार्मिक शुभ आचरण से बनता है, को अपने द्वारा शुरु किए धर्म की मुख्य बात कही, तो वह धर्म हर किसी को छूने लगा और बहुत तेजी से दूर-दूर तक देशे विदेश में फैलने लगा।

कहते हैं कि इतिहास पलटी मारता है और कुछ समय पश्चात वहीं आ जाता है जहां पर एक समय था। जब महर्षि दयानन्द वेदों का संदेश लेकर आम जनता के बीच आए, तब भारत में भी धर्म के ठेकेदार भी आचार व्यवहार से विहीन थे। आम जनता को पौराणिक ढंकोसलों क्षरा

ठगना, गलत रास्ते पर डालना इनका काम था। पण्डित पुजारी धर्म से आचार व्यवहार से विहीन हो चुके थे। सत्य व धर्म के बाकी गुण दया, करुणा, चौरी न करना, अपिग्रह, स्वाध्याय उनके जीवन में नहीं थे। एक ही धर्म था कि लोगों को लूटों और वे समण्टे थे कि ईश्वर ने उन्हें ब्राहमण परिवार में जन्म देकर उसका अधिकार दिया है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने भी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने एक बार कहा था "यदि कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति चरित्रवान नहीं है तो क्या उसे पण्डित कहूंगा? कभी नहीं। यदि अनपढ़ व्यक्ति ईमानदारी से काम करता है, ईश्वर में विश्वास रखता है और उससे प्रेम करता है तो मैं उसे महापण्डित मानने को तैयार हूँ। क्या दायित्व बनता है आपका ऐसी स्थिति में,

1 दान देते समय सोचें—क्या आपका धन ठीक जगह जा रहा है? जरूरतमन्द को दें न की उनको जिनके पास पहले से ही बहुत पैसा है व जो संग्रह करेगे। इससे अच्छा है आप ही संग्रह कर लें, ठीक समय आने पर आप को जरूरतमन्द रोगी, विपदा में फंसा व्यक्ति, गरीब विद्यार्थी अवश्य मिल जायेगा जिसे आप संग्रह किया धन दे सकते हैं।

2 जब आप ने दान देना हो तो वहां दे जिसे आप देख सकते हैं। आप अपने आसपास अस्पताल, सरकारी स्कूल का चक्कर लगायेंगे तो बहुत जरूरतमन्द रोगी, विद्यार्थी व विपदा में फसं व्यक्ति आप को मिल जायेंगे व एक यह ऐहसास भी होगा कि भगवान ने हमें करोड़ों अरबों से अच्छा बनाया है। दान कभी भावुक होकर व किसी के कहने पर न दें। जहां दानो की बड़ी-बड़ी घोषणा हो वहीं भी दान न दें। दान की घोषणा करना ही गलत प्रथा है।

3 विज्ञापन, पत्रिकाओं को पढ़कर कभी भी गउशाला, अतिथीयज्ञ, बहुकूण्डीय यज्ञों, गुरुकुलों के लिये पैसा न भेजें। जो सचमुच कर रहे हैं उनको पैसा मागने की आवश्यकता नहीं होती वहां साधन अपने आप बनते जाते हैं। आपने किसी गरुद्वारे वाले को पैसे मांगते नहीं देखा होगा जब की हमारे सिक्ख भाई बहुत श्रद्धा प्रेम से सेवा करते हैं व भोजन खिलाते हैं।



4 कभी किसी बाबे, महन्त, महाराज, विज्ञापनो द्वारा ख्याती प्राप्त

धर्मगुरु, पण्डित को दान दक्षिणा न दें। हां, अगर आप ने कोई कर्मकाण्ड जैसे संस्कार, हवन, कथा, पूजा करवाई हे तो उसकी देना अलग बात है। परन्तु साथ ही, तपस्वी व त्यागी विद्वान, महात्मा व सन्यासी की सब जरूरतों का ध्यान रखना हमारा धर्म है।

5 आज के हालात को देखते हुये किसी मन्दिर, भवन, यज्ञशाला, गउशाला के लिये दान न दें। अगर गाय के लिये बहुत आदर है तो स्वयं गाय पाल लें। अगर आप अपने चारों और नजर दोड़ायेगें, तो देखेंगे कि जो समाज, भवन आपके बजुर्गो ने बहुत श्रद्धा से समय व धन देकर बनवाये थे, उन में कुछ बन्द पड़े हैं, कुछ बन्द होने के कागार पर हैं, कुछ आप के लिये बन्द हैं क्योकी किसी ने नजायज कब्जा कर रखा है व कुछ अनैतिक गतिविधियों के गढ़ बन गये हैं।

भारत का इतिहास बताता है कि देश को गुलाम रखने में सब से बड़ा हाथ हमारे धर्म गुरुओं का व पण्डितों का है व आज भी स्थिति सुधरी नहीं है बल्कि पहले से बिगड़ी है। इस लिये हमे सोचकर चलना होगा।

सदा याद रखें कि मोहमद गज़नी ने सोमनाथ के मन्दिर को इस लिये निशाना बनाया था क्योकि उस मन्दिर में सब से अधिक धन, दौलत, हीरे व जवाहारात थे व मोहमद गज़नी को उस मन्दिर तक पहुचाने वाला वहां का एक पुजारी था जिसने धन के लोभ में यह सब किया, यह अलग बात है कि लूटने के बाद मोहमद गज़नी ने उस पुजारी को भी मार दिया। पर आज किसी मोहमद गज़नी को बाहर से आने की जरूरत नही, हमारे यहां ही बहुत हैं। मजे की बात

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार है  
लेखका का मुबाईल टेलीफोन नं दिया है उसी पर सम्पर्क करें।  
कानूनी कारवाई के लिए चण्डीगढ़ स्थित न्यायालय वैधय है



## Rajya Sabha more sinned than ever before Cure---Wind up Rajya Sabha and increase Lok Sabha Seats

Bhartend Sood

After the recent happenings linked to elections for Rajya Sabha in Himachal Pradesh and UP, one shouldn't be surprised if many like me are mulling over whether we need Rajya Sabha that has become a chamber to give respectable position of Law Maker with salary and allowances to a many of unscrupulous politicians who are elected by equally unprincipled legislatures.

Nobody is infallible and with due respects this applies to the makers of our constitution also. But, then by keeping the provision of article 368 which empowers Parliament to amend the constitution without changing the basic structure, as enshrined in our Preamble, they absolve themselves of the mistakes if any and put faith in the



wisdom of the future generations.

But, the selfish interest born out of greed, arrogance and attachment is the foe of wisdom. Our leaders of various hues whether the Congress or BJP, the two main parties which have ruled the country after independence, has had wise leaders but not free from these vices and that is precisely the reason this august institution lost its efficacy but despite that has been kept alive. It is a fallacy that for the federal structure to stay working effectively, we need two chambers because the Rajya Sabha has indirectly elected representatives from all states. For that matter even Lok Sabha has the members from all states who are capable to represent their state and safeguard its interest. Tamil Nadu and Karnataka have shown many times in the past. Then, what is making this institution survive even after having lost its utility and especially when only one third of democracies around the world have two chambers?

There can be three main reasons.

(1) With the passage of time, this Chamber has been identified in India as the

parking yard for the failed politicians or stooges of the political bosses by the political parties, be it the Congress, BJP or the smaller parties. This was started by the Congress party when it was all pervasive and it was not possible to award ministerial posts to all its leaders in the running of the government, especially the elderly ones who had tall claims in freeing the country from the British. Those who were very close to the centre would get Governorship and others not so lucky would be accommodated as MPs in Rajya Sabha. Somehow other parties when they came into power also saw virtue in the practice started by their one time Congress and they continued in the template set by the then Congress party. The Congress party is right when it tells BJP that it did do anything new and has carried forward what they started.

(2) Political parties need funds which easily come from Business tycoons with political ambitions. Again this practice, started by the Congress, is imbibed by all others. Not all the persons who come by this route are without scholarships but a few notorious ones like Mallaya also found entry.

(3) When any Institution becomes vulnerable to abuse, all try different methods to make capital out of it. Off late this Chamber has found its utility for creating defections and breaking the parties. Rajya Sabha seat is used as a lollypop to lure the politicians provided they switch over from their parent party. Ashok Chavan is the recent example.

(4) Off late elections to Rajya Sabha have an element of cross voting, a notorious act involving corrupt and unethical means by our elected representatives. Referring to the Congress Party MLAs, Abhishek Singhvi who lost election from Himachal Pradesh, says, "They supped and drank with him on Monday nights and backstabbed on Tuesday." Any MP elected by such characters doesn't deserve to be a lawmaker and such voters shouldn't have the right to vote. Not only this, the institution where lawmakers are devoid of character and principles doesn't deserve to exist. Mahatma Gandhi had said, "Politics without principles is a sin."

Now when this chamber has outlived its utility and is being misused, will it not be better to wind it up and instead increase the seats of Lok Sabha from the existing 552 to 1000 minimum? This number of 552 was fixed in 1950 when the population of India was 35 Crores. Now the population has gone up to 142 crores i.e. four folds increase. China, though not a democracy, with almost the same population has 2977 seats in their law framing Chamber National People's Conference. Therefore to have better representation and say of people the number should be increased and the best course will be to do it by winding up Rajya Sabha which is a huge burden on the exchequer. According to an RTI reply, India spent around Rs 200 crore on salaries, allowances and facilities for Rajya Sabha MPs over the last two years with around Rs 63 crore spent on their travel alone. It is a big amount for a developing country like India. Our Prime Minister Narendra Modi has the knack of reforming things. I am very optimistic that if he gets a third term 'winding up of this Chamber and to increase the Lok Sabha seats can be on his agenda'. But if he doesn't do so then nobody else will do and this white elephant will continue to stay at Taxpayers cost.

## वैलंटाइन डे की प्रासंगिकता : अपेक्षित है परंपरा और आधुनिकता में सही समन्वय

सीताराम गुप्ता

भारतीय संस्कृति अत्यंत समृद्ध है इसमें संदेह नहीं। उसका पालन करना व उसे अक्षुण्ण बनाए रखना हम सब का दायित्व एवं परम कर्तव्य है लेकिन परिवर्तन भी जीवन का अनिवार्य तत्त्व है जिसकी उपेक्षा करना अथवा उससे बचना असंभव है। परिवर्तन के अभाव में व्यक्ति व समाज का विकास अवरुद्ध हो जाता है। इसी से परंपरा व परिवर्तन को लेकर द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसीलिए पूरे देश में पब कल्चर और वैलंटाइन डे जैसे आयोजनों को लेकर परस्पर विरोधी तलवारें खिंची रहती हैं। इस संबंध में कालिदास याद आ रहे हैं। कालिदास ने कहा है :



**पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।  
संतः परीक्ष्यान्यतरद् भंजते, मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥**

जो पुराना है वह सभी उत्तम अथवा उपयोगी नहीं होता और जो नया है वह नया होने मात्र से त्याज्य अथवा निंद्य नहीं हो जाता। समझदार व्यक्ति उचित परीक्षा करके ही उसकी अच्छाई-बुराई अथवा उपयोगिता-अनुपयोगिता स्वीकार करते हैं। मूढ़ व्यक्ति दूसरों के मत पर अवलंबित रहते हैं इसलिए समस्याएँ उत्पन्न होती हैं क्योंकि ये मूढ़ व्यक्ति ही प्रायः ग़लत विरोध के लिए उत्तरदायी होते हैं। और ये जिन लोगों के मत पर अवलंबित रहते हैं वे अपने लाभ के अनुसार किसी घटना को सही या ग़लत ठहराते हैं। क्या ठीक है और क्या ग़लत ऊपरी तौर पर या फिर मात्र किसी एक घटना से इसका निर्णय कर पाना बड़ा मुश्किल है।

यदि पूर्वाग्रह से रहित होकर विश्लेषण या परीक्षण करें तो हम पाते हैं कि हमारी हज़ारों वर्षों की परंपरा अत्यंत समृद्ध होते हुए भी आज समग्र रूप से प्रासंगिक और उपयोगी नहीं है। मनुष्य लगातार बदल रहा है। संस्कृति भी मनुष्य द्वारा निर्मित है अतः परिवर्तनशील है, बदल रही है और इस बदलाव को स्वीकार करना अनिवार्य है। परिवर्तित मूल्यों को स्वीकार करें लेकिन पुराने मूल्य जो आज भी उपयोगी और प्रासंगिक हैं उनको भी स्वीकार करना अनिवार्य है। हाँ जो मान्यताएँ और मूल्य आज प्रासंगिक अथवा उपयोगी नहीं रहे; जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के संतुलित विकास में बाधक हैं तथा जिनसे विभिन्न समुदायों और मतों के मानने वालों में वैमनस्य फैलता है; उन्हें त्यागना ही श्रेयस्कर है।

शरीर का कोई अंग रुग्ण हो जाए तो उसकी चिकित्सा अनिवार्य है और कभी-कभी तो पूरे शरीर को बचाने के लिए उस अंग को काटना भी पड़ता है। जूता फट जाने पर उसकी मरम्मत करवाना अनिवार्य है लेकिन घिसकर टूट जाने पर उसे फेंक देना ही समझदारी है। संस्कृति और उदात्त जीवन मूल्यों की तुलना जूते से नहीं की जा सकती लेकिन उसका वर्तमान में अनुपयोगी और अप्रासंगिक तत्त्व टूटे जूते के समान त्यागने योग्य ही हो जाता है। ग़लत परंपराओं को ढोने से अथवा अनुपयोगी चीजों को न त्यागने से नई और उपयोगी चीजों को ग्रहण करना कठिन हो जाता है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास में बाधक होता है।

परिवर्तन और नयापन विकास के अनिवार्य तत्त्व हैं। इससे नई संस्कृति और नई नैतिकता का जन्म होता है लेकिन कुछ लोग इसको ही अपसंस्कृति और अनैतिकता मान लेते हैं। परिवर्तन और आधुनिकता अनिवार्य है लेकिन आधुनिकता और परिवर्तन के नाम पर अनुशासनहीनता तथा उच्छृंखलता किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं। आज संस्कृति, नैतिक मूल्य और उनसे प्रभावित जीवन शैली सब तेज़ी से बदल रहे हैं। इस परिवर्तन से जो निकल कर आया है क्या वह सारा का सारा स्वीकार्य हो सकता है? कदापि नहीं। आज परिवर्तन की गति अत्यंत तीव्र हो गई है। पहले जितना परिवर्तन सैकड़ों सालों में होता था अब कुछ दशकों में हो रहा है और दशकों का परिवर्तन सालों में।

इतनी तीव्र गति से हो रहे सारे परिवर्तन को आँखें मूँदकर आत्मसात करना उचित नहीं कहा जा सकता। यह परिवर्तन जो सुखद लग रहा है उसमें दुखद तत्त्व भी हैं जो कुछ समय के बाद ही स्पष्ट हो सकेंगे। वैज्ञानिकों ने अनेक दवाओं का आविष्कार किया लेकिन उनमें से अनेक दवाओं पर प्रतिबंध भी लगाए गए क्योंकि उनके उपयोग से बाद में पता चला कि ये

उपचारक होने के साथ-साथ हानिकारक भी थीं। जंक फूड और फास्ट फूड के दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। डिब्बाबंद खाना और पेय हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं तो फिर क्यों आधुनिकता के नाम पर इनका उपभोग बढ़ता ही जा रहा है? उचित व संतुलित सोच के अभाव में ही ऐसा होता है।

आधुनिकता अथवा प्रगतिशीलता का अर्थ समस्त परंपरागत नैतिक मूल्यों का ह्रास, अनुशासनहीनता, उच्छृंखलता अथवा नग्नता नहीं। इसकी अपेक्षा सोच अधिकाधिक आधुनिक, प्रगतिशील और वैज्ञानिक होनी चाहिए। जब सोच अधिकाधिक आधुनिक होगी, विचार प्रगतिशील होंगे तथा दृष्टिकोण वैज्ञानिक होगा तो ऐसे में व्यक्ति और समाज में संकीर्णता की अपेक्षा धैर्य, सहनशीलता और स्वीकार्यता जैसे गुणों का ही विकास होगा। अच्छे और बुरे में अंतर्भेद करने और उपयोगी तथा सही चुनने की क्षमता का विकास भी होगा। यदि वास्तव में सुसंस्कृत बनना है तो सोच को आधुनिक बनाना होगा और साथ ही संकीर्णता के साथ-साथ उच्छृंखलता तथा अनुशासनहीनता से भी बचना होगा। विरोध के लिए विरोध की नीति से मुक्त होना होगा।

परंपरा और आधुनिकता में समन्वय अनिवार्य है। इसके साथ-साथ पौरात्य और पाश्चात्य में भी सही समन्वय होना अनिवार्य है। जिस प्रकार पूर्व का सब कुछ ग्राह्य नहीं है उसी प्रकार पश्चिम का भी सब कुछ त्याज्य नहीं है। पश्चिमी समाज की अच्छाइयों को स्वीकार करके तथा अपनी बुराइयों को त्याग कर ही हम सही अर्थों में विश्व नागरिक बन सकते हैं। श्रेष्ठ समाज की स्थापना के लिए परंपरा और आधुनिकता का उचित समन्वय अनिवार्य है। इसलिए अपने प्रिय अथवा हितैषी की भी ग़लत बातों का विरोध करना और अपने विरोधी की भी सही बात का समर्थन करना अनिवार्य है। विरोध विरोध के लिए न होकर ग़लत के लिए होना चाहिए। तभी समाज सही उन्नति कर सकेगा।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,  
दिल्ली - 110034

## ईश्वर के बाद नमन माता पिता को

हमारा पहला नमन उस पिता को होता चाहिए जिसने यह जगत बनाया जिसमें यह प्राणीजगत भी आता है। कारण वह जगत पिता इस सारे जगत और प्राणीजगत को चलाने वाला है। वही हमें जीवन के साधन सूर्य का प्रकाश, वायु, जल, अग्नि, फल, फूल और बनास्पति देकर प्राण देता है, पालता है व रक्षा करता है।

दूसरा प्रणाम उन माता पिता को जन्म देते हैं, पालन पोषण कर इस योग्य बनाते हैं। अक्सर वे अपने को कष्ट में डालकर

भी हमें सुख देने की जी जान से कोशिश करते हैं। हम जब स्वयं माता पिता बनते हैं तभी यह महसूस कर पाते हैं कि हमारे माता पिता ने हमारे को यहां तक पहुंचाने में कितना त्याग किया। उनके त्याग के बिना हम यह सभी सुख न भेग रहे होते। आर्य समाज के सत्संग में एक पंडित जी द्वारा बताई यह सच्ची घटना कभी नहीं भूल सकती। पलवल हरियाणा में एक मां अपने दो छोटे बेटों के साथ जा रही थी कि अचानक जोर के ओले पड़ने शुरू हो गए। कहीं छुपने का स्थान न पा कर मां ने अपने लालों को अपने नीचे छुपा लिया और उन के उपर लेट गई। जब ओले पड़ने बन्द हुए तब मां बड़े बड़े ओलों के प्रभाव से प्राण दे चुकी थी परन्तु उसके लालों को कुछ न हुआ था। यह है माता पिता इसी लिए ईश्वर के बाद वे नमन के हकदार हैं।



## Dealing with Procrastination

Bhartend Sood



Recently the Business tycoon Harsh Goenka had a message for procrastinators - "Do it now!". I'll go a step ahead and say, 'now or never' as this anecdote suggests.

My friend, a senior advocate, happened to be an advisor to a Businessman who was combating myriad health problems due to the age factor. He had lost his wife long back and both the sons were settled abroad. A 24x7 Businessman, he

was too much attached to his business and was not prepared to leave India to stay with his sons. And at the same time, it was just not possible for his sons to be on his bed side all the time.

One day he called my friend and said " I have a strong premonition that my end is near. Therefore, I would like to create a trust with my moveable and immoveable assets running in to almost 800 crores, to be used for imparting education to the unprivileged. Further, I would like you to manage the affairs of the trust." You may prepare a testament accordingly."

Busy with court work, my friend thought that he would prepare in leisure as it called for preparing the list of his assets. Hardly a week had passed, he received a call from the elder son of the Businessman, " Uncle, I am sorry to inform that papa expired three days back. He has left a WILL bequeathing all his assets to us. Since you were his legal adviser, we need your help to inherit the same. Stunned, my friend was convinced that man by nature is procrastinator.

Ruminating in complete silence, an incident related with Karna of Mahabharata episode flashed across my mind. Karna is best remembered for making instant charities without having a desire to be recompensed. One day when he was engaged in his Oil bath ritual, Shri Krishna thought that it was the right time to test him and asked him to donate his golden kalasha to him which he, at that point of time, was holding in his left hand. In a split of second, he handed over that golden kalasha to Krishna. Pleasantly amused, Krishna asked Karma why he jumped to donate even without performing the rituals of washing his hands and ceremoniously giving it with his right hand as per the rituals. **Karna replied that he did not want to delay the gesture as the man by nature is flicker minded and his thoughts change nanosecond.**

True, if any good thought comes in mind, man should never think twice in executing that because he might not have tomorrow to make up for his procrastination. However, it is a fallacy that its cause is laziness. It is totally a mind subject and is attributed to the flicker mindedness which many a times results from lack of self belief, fear or unfounded negative beliefs. When one is convinced about the salutary effects of the cause, idea or a plan he should execute it immediately before his good plan becomes the victim of unfounded negative beliefs and fears. Self belief is the bulwark to procrastination.

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059  
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली  
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महर्षि दयानन्द की 200 में जन्म दिवस पर चण्डीगढ़ से आर्य परिवार उनके जन्म स्थान टक्कारा में मनाये जाने वाले उत्सव में शामिल हुए।



MRS.  
AMBIKA VERMA  
DONATED  
ATTA BAGS  
TO NGO  
FAMILIES



MRS.  
NAINA GUPTA  
DONATED  
FRUITS  
TO NGO  
CHILDREN

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह      धार्मिक सखा 500 प्रति माह  
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह      धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह  
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह      धार्मिक साथी 50 प्रति माह  
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307  
Bank : SBI  
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय  
श्रीमती शारदा देवी  
सूद

निर्माण के 70 वर्ष



स्वर्गीय  
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त  
सूद

## गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई  
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalियar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमास्युटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



DAMINI



MUKESH CHANDER KHULLAR



RAVI KIRAN



VISHNU SHARMA



CHITKARA MADAN LAL



RAMESH PURI



P K MALHOTRA



RAJ MEHAN

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children



# DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972  
FOR BETTER HOMES



48  
Years



IS : 12701



Water  
Storage  
Tanks  
Diplast Water  
Storage Tanks

IS : 4985



PVC  
Pressure  
Pipes  
Diplast PVC  
Pressure Pipes

IS : 9537



PVC  
Electrical  
Conduits  
Diplast PVC  
Electrical Conduits

IS : 13592



PVC  
SWR  
Pipes  
Diplast PVC  
SWR Pipes

Learn Waste  
Segregation &  
Composting on  
**Zoom Meeting**  
Contact :  
9041655102

DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)

Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187

## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,  
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये  
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh  
9217970381 and 0172-2662870